जुलाई-दिसम्बर 2019

हिंदी भाषा और उसकी लिपि का इतिहास

[क] पाठ्यक्रम के उद्देश्य

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को हिंदी भाषा और उसकी लिपि के इतिहास से परिचित कराना है। भारत के संविधान में देवनागरी लिपि में लिखित हिंदी को संघ की राजभाषा घोषित किया गया है। हिंदी को पढने वाले छात्रों के लिए आरंभ में ही हिंदी भाषा संबंधी सामान्य जानकारी देना आवश्यक है। वैश्वीकरण के साथ ही हिंदी की वैश्विक स्थिति को जानना समझना भी महत्वपूर्ण हो जाता है। इस पाठ्यक्रम का लक्ष्य इन बिंदुओं से छात्रों को परिचित कराना है।

[ख] पाठ्यक्रम के पठन-पाठन के परिणाम

यह पाठ्यक्रम छात्रों की हिंदी भाषा के सैद्धांतिक पहलूओं के साथ-साथ व्यावहारिक पहलूओं को समझने में मदद करेगा। हिंदी भाषा को और अधिक रोजगारपरक और व्यावहारिक बनाने के लिए कंप्यूटर जैसे तकनीकी शिक्षा के पक्षों से भी छात्रों को परिचित करवाया जाएगा। भाषा के बदलते परिदृश्य को आरंभ से अब तक की प्रक्रिया में समझना बहुत महत्वपूर्ण है। यह पाठ्यक्रम भाषा के आरम्भ से अब तक के विकास के विविध आयामों को प्रस्तुत करता है जो विद्यार्थियों के लिए उपयोगी होगा।

हिंदी कविता आदिकाल एवं भक्तिकालीन काव्य

[क] पाठ्यक्रम के उद्देश्य

इस कोर्स का लक्ष्य छात्रों को आदिकालीन एवं भक्तिकालीन साहित्य से परिचित कराना है। इस कोर्स के माध्यम से छात्र प्रमुख आदिकालीन एवं भक्तिकालीन कवियों एवं उनके हिंदी साहित्य में योगदान से परिचित हो सकेंगे।

[ख] पाठ्यक्रम के पठन-पाठन के परिणाम

इस कोर्स के माध्यम से छात्रों को हिंदी साहित्य के आदिकाल और भक्तिकाल के महान कवियों के विचारों एवं उनके सामाजिक सरोकारों को समझने में मदद मिली। आदिकाल से अमीर खुसरों और विद्यापति तथा भक्तिकाल से सूरदार, तुलसीदास और मीराबाई के काव्य को जानने और समझने का मौका मिला, साथ ही हिंदी साहित्य एवं हिंदी समाज में इनके योगदान के बारे में भी जानने का मौका मिला। छात्रों को यह भी ज्ञान प्राप्त हुआ कि किस प्रकार भक्तिकालीन कवि अपने समय की बुराइयों जैसे सामंतवाद आदि का विरोध अपने काव्य में कर रहे थे।

हिंदी साहित्य का इतिहास (आधुनिक काल)

[क] पाठ्यक्रम के उद्देश्य

इस पाठ्यक्रम का लक्ष्य छात्रों को साहित्येतिहास की अध्ययन प्रक्रिया में आधुनिक साहित्य के विकास का परिचय प्रदान करना है। छात्रों को साहित्य के प्रयोजन एवं उसके स्वरुप से परिचित कराना भी इस क्रम में महत्वपूर्ण है।

[ख] पाठ्यक्रम के पठन-पाठन के परिणाम

साहित्येतिहास का एक महत्वपूर्ण प्रयोजन बदलते समय के समाज पर पड़ने वाले प्रभाव से छात्रों को परिचित करवाना है। यह पाठ्यक्रम छात्रों की आधुनिककाल के साहित्येतिहास को जानने समझने में मदद करेगा। साथ ही छात्र यह भी जान पाएंगे कि आधुनिक काल के साहित्य में पदार्पण के कौन-कौन से प्रमुख कारण थे।

हिंदी कविता (आधुनिक काल छायावाद तक)

[क] पाठ्यक्रम के उद्देश्य

इस कोर्स का लक्ष्य छात्रो में आधुनिक कविता की समझ विकसित करना है। इसके अंतर्गत विभिन्न कवियों एवं उनकी रचनाओं का अध्ययन किया जाएंगा।

[ख] पाठ्यक्रम के पठन-पाठन के परिणाम

इस कोर्स के माध्यम से छात्रों को आधुनिक कविता के उद्भव और विकास को जानने में मदद मिली। समकालीन परिवेश और साहित्य के परस्पर संबंध को समझने की आवश्यकता पर बल दिया गया ताकि छात्र बेहतर ढ़ंग से आधुनिक कविता के सरोकारों को समझ पाए। कक्षा में कविताओं का वाचन एवं विश्लेषण किया गया और छात्रों को इन महत्वपूर्ण कवियों के रचनाकर्म के विविधार्थ से परिचित कराया गया।

हिंदी कहानी

[क] पाठ्यक्रम के उद्देश्य

इस कोर्स का लक्ष्य छात्रों को हिंदी कहानी के उद्भव और विकास से परिचित कराना है। छात्रों को यह भी समझने में मदद मिलेगी की एक गद्य विधा के रूप में कहानी की स्थिति क्या है।

[ख] पाठ्यक्रम के पठन-पाठन के परिणाम

इस कोर्स के माध्यम से छात्रों को कथा साहित्य में कहानी के स्थान को परखने का अवसर प्राप्त होगा, साथ ही एक विधा के रूप में कहानी के हिंदी साहित्य में योगदान को भी जानने समझने का अवसर प्राप्त होगा। प्रमुख कथा साहित्यकारों के जीवन और रचनाओं के माध्यम से कहानी की उपयोगिता को जानने का अवसर प्राप्त होगा। इसके अलावा छात्रों को कहानी लेखन के रचनात्मक पक्ष को जानने का भी अवसर प्राप्त होगा।

पाश्चात्य काव्यशास्त्र

[क] पाठ्यक्रम के उद्देश्य

इस कोर्स का उद्देश्य विद्यार्थियों में पाश्चात्य काव्यशास्त्र की समझ और चिंतन के नए आयामों की ओर आकर्षण को विकसित करना है। जिससे की विधार्थी साहित्य के एक नए पक्ष का ज्ञान प्राप्त कर पाए।

[ख] पाठ्यक्रम के पठन-पाठन के परिणाम

इस विषय के पठन-पाठन के मूल में पश्चिम की विभिन्न चिंतन धाराओं का अध्ययन करना एवं महान पाश्चात्य चिंतकों द्वारा प्रदत्त सहिन्यिक सिद्धांतों का मनन करते हुए प्राचीन काल से आधुनिकता की ओर चली आ रही काव्यशास्त्रीय चिंतनधारा की समझ को विकसित करना है।

हिंदी नाटक/एकांकी

[क] पाठ्यक्रम के उद्देश्य

इस कोर्स का उद्देश्य छात्रों को हिंदी नाटक और एकांकी के उद्भव और विकास का परिचय देना है ताकि विद्यार्थी नाटक की विधा को बेहतर ढ़ंग से समझ पाए। हिंदी नाटक और एकांकी के रचनात्मक पक्ष को जानना- समझना भी पाठ्यक्रम का लक्ष्य है।

[ख] पाठ्यक्रम के पठन-पाठन के परिणाम

यह पाठ्यक्रम छात्रों की नाटक की विधा को विभिन्न नाटककारों के नाटकों के द्वारा समझने में मदद करेगा। छात्र इस सन्दर्भ में गद्य विधा के जनक कहे जाने वाले भारतेन्दु हरिश्चंद्र, जयशंकर प्रसाद और उपेंद्रनाथ अश्क आदि प्रसिद्ध नाटककारों की रचनाओं का अध्ययन अध्ययन करेंगे। इन सभी नाटककारों को उनकी युगीन परिस्थितियों से जोड़कर देखने से तत्कालीन समय की सांस्कृतिक, राजनैतिक और सामाजिक स्थिति की भी जानकारी प्राप्त होगी, जिससे कि इन रचनाकारों की रचनाओं को और बेहतर ढ़ंग से समझा जा सकेगा।

DSE-I अस्मितामूलक विमर्श और हिंदी साहित्य

[क] पाठ्यक्रम के उद्देश्य

इस पाठ्यक्रम का लक्ष्य छात्रों को विभिन्न अस्मिताओं का सैद्धांतिक और व्यावहारिक ज्ञान देना है। छात्रों को विभिन्न रचनाओं के अध्ययन के आधार पर संवेदनात्मक विश्लेषण में निपुण करना है।

[ख] पाठ्यक्रम के पठन-पाठन के परिणाम

इस पाठ्यक्रम के माध्यम से छात्रों को विभिन्न अस्मिताओं के विषय में जानने समझने का अवसर प्राप्त होगा। साथ उनकी समस्याओं और चुनौतियों के बारे ज्ञान की प्राप्ति होगी। आज के समय में अस्मिताओं का अध्यन एक बहुत ही महत्वपूर्ण विषय है, इसी कारण यह महत्वपूर्ण हो जाता है कि छात्रों को इस प्रकार के विषय के बारे में अवगत करवाया जाए ताकि वह एक बेहतर समाज का निर्माण कर पाए।

DSE-II हिंदी भाषा व्यावहारिक व्याकरण

[क] पाठ्यक्रम के उद्देश्य

किसी भी भाषा के ज्ञान के लिए उस भाषा के व्याकरण का ज्ञान विशेष महत्त्व रखता है। ध्वनि, शब्द, पद, वाक्यांश का न केवल ज्ञान होना चाहिए वरन कसी भी भाषा को एकरूप बनाने में व्याकरण की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। वर्तमान समय में हिंदी भाषा के वैश्वीकृत होते रूप को सुदृढ़ करने हेतु व्याकरण को व्यावहारिक बनाना भी अनिवार्य हो गया है। इस पाठ्यक्रम का लक्ष्य छात्रों को इन्हीं बिन्दुओं से परिचित कराना है।

[ख] पाठ्यक्रम के पठन-पाठन के परिणाम

यह पाठ्यक्रम छात्रों को भाषा के व्याकरणिक नियमों से परिचित करवाएगा और व्याकरण के आधारभूत नियमों की जानकारी देगा। भाषा की व्याकरण के द्वारा ही किसी भाषा को मानक रूप की प्राप्ति होती है ऐसे में यह पाठ्यक्रम छात्रों को भाषा के मानक रूप प्राप्त करने की प्रक्रिया से परिचित करवाएगा। इससे छात्रों को भाषा की विविध ध्वनियों के उच्चारण के नियमों का समुचित ज्ञान प्राप्त होगा।

जी.ई. (हिंदी सिनेमा और उसका अध्ययन)

[क] पाठ्यक्रम के उद्देश्य

इस पाठ्यक्रम को विशेष रूप से सिनेमा में रूचि रखने वाले विद्यार्थियों के लिए निर्मित किया गया है। इसका लक्ष्य छात्रों को सिनेमा जगत की जानकारी प्रदान करना है।

[ख] पाठ्यक्रम के पठन-पाठन के परिणाम

इस पाठ्यक्रम के माध्यम से छात्रों में हिंदी सिनेमा, समाज और संस्कृति के परस्पर संबंधों की समझ विकसित हो पाएंगी। छात्रों को सिनेमा की सैद्धांतिक समझ के साथ-साथ सिनेमा निर्माण, प्रसार और कैमरे की भूमिका आदि की व्यावहारिक समझ विकसित करने में भी मदद मिलेगी।

जी.ई. (भाषा और समाज)

[क] पाठ्यक्रम के उद्देश्य

इस पाठ्यक्रम का लक्ष्य भाषा और समाज के अन्त: सम्बन्ध स्पष्ट करते हुए भाषा और समाज के विविध पहलूओं को जानने में छात्रों की मदद करना है। छात्रों को समाज में भाषा के व्यवहार की जानकारी देना है।

[ख] पाठ्यक्रम के पठन-पाठन के परिणाम

इस पाठ्यक्रम के द्वारा छात्रों में भाषा और समाज के परस्पर संबंध और समाज भाषाविज्ञान की समझ विकसित हो पाएंगी। इसके इतर भाषाई विविधता की बेहतर समझ विकसित करने के लिए भाषा को समुदाय, जाति और जातीयता के सन्दर्भ में पढने की आवश्यकता पर भी विचार किया जाएगा

SEC विज्ञापन और हिंदी भाषा

[क] पाठ्यक्रम के उद्देश्य

इस पाठ्यक्रम का लक्ष्य छात्रों को हिंदी भाषा के सन्दर्भ में विज्ञापनों की जानकारी देना है ताकि वह विज्ञापन आदि के क्षेत्र में रोजगार की संभावनाओं को समझकर उनसे लाभान्वित हो पाए।

[ख] पाठ्यक्रम के पठन-पाठन के परिणाम

इस पाठ्यक्रम के माध्यम से छात्र विज्ञापन निर्माण एवं बाजार की समझ विकसित कर पाएंगे। इसके आलावा छात्र विज्ञापन के निर्माण और उनके प्रभावों को समाज की आवश्यकताओं से जोड़कर देखने की तार्किक समझ विकसित कर सकेंगे। यह पाठ्यक्रम छात्रों को वर्तमान समय में हिंदी की व्यावहारिक उपयोगिता के माध्यम से रोजगार के अवसर उपलब्ध करवाने में सहायक सिद्ध होगा।

AECC हिंदी भाषा और संप्रेषण

[क] पाठ्यक्रम के उद्देश्य

इस पाठ्यक्रम का लक्ष्य भाषिक संप्रेषण के स्वरुप और सिद्धांतों से छात्रों का परिचय करवाना है। छात्रों को संप्रेषण के सभी माध्यमों का ज्ञान प्रदान करवाया जाना भी इसका लक्ष्य है ताकि संप्रेषण को पूर्ण रूप से समझा जा सके।

[ख] पाठ्यक्रम के पठन-पाठन के परिणाम

इस पाठ्यक्रम की मदद से छात्र संप्रेषण की प्रक्रिया और मॉडलों के अलावा अभाषिक संप्रेषण की आवश्यकता एवं इसके प्रयोगों के बारे में एक बेहतर समझ विकसित कर पाएंगे। रोजगार की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए व्यावसायिक सम्प्रेषण का ज्ञान भी छात्रों को प्रदान किया जाएगा।

बी.ए. (प्रोग्राम)

HN-A हिंदी गद्य उद्भव और विकास 'क'

[क] पाठ्यक्रम के उद्देश्य

इस पाठ्यक्रम का लक्ष्य छात्रों को हिंदी गद्य के उद्भव और विकास से परिचित कराना है ताकि वह गद्य की सभी विधाओं के विकास को बेहतर ढ़ंग से समझ पाए।

[ख] पाठ्यक्रम के पठन-पाठन के परिणाम

इस पाठ्यक्रम के माध्यम से छात्रों को हिंदी गद्य के उद्भव की आवश्यकता को समझने का अवसर प्राप्त होगा और साथ ही यह जाने में मदद मिलेगी की गद्य की विधा का विकास किन परिस्थितियों में हुआ। हिंदी गद्य के विकास को बेहतर ढ़ंग से समझने के लिए कुछ पाठों को पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया गया है ताकि छात्र गद्य की विधाओं का भी परिचय प्राप्त कर पाएँ। जिनमें प्रेमचंद का उपन्यास 'जुलूस', रामचन्द्र शुक्ल का निबंध 'उत्साह' और भारतेंदु का नाटक 'अंधेर नगरी आदि रचनाएँ सम्मिलित है।

HN-C हिंदी गद्य उद्भव और विकास 'ग'

[क] पाठ्यक्रम के उद्देश्य

इस पाठ्यक्रम का लक्ष्य छात्रों को हिंदी गद्य के उद्भव और विकास से परिचित कराना है ताकि वह गद्य की सभी विधाओं के विकास को बेहतर ढ़ंग से समझ पाए।

[ख] पाठ्यक्रम के पठन-पाठन के परिणाम

इस पाठ्यक्रम के माध्यम से छात्रों को हिंदी गद्य के उद्भव की आवश्यकता को समझने का अवसर प्राप्त होगा और साथ ही यह जाने में मदद मिलेगी की गद्य की विधा का विकास किन परिस्थितियों में हुआ। आधुकनिक गद्य का जनक माने जाने वाले भारतेन्दु के सम्पूर्ण काल की जानकारी भी छात्रों को प्राप्त होगी। हिंदी गद्य के विकास को बेहतर ढ़ंग से समझने के लिए कुछ पाठों को पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया गया है ताकि छात्र गद्य की

विधाओं का भी परिचय प्राप्त कर पाएँ। इन रचनाओं में प्रेमचंद की 'दो बैलों की कथा' बालकृष्ण भट्ट का निबंध 'साहित्य जनसमूह के ह्रदय का विकास है' आदि कृतियां प्रमुख है।

हिंदी अनुशासन

हिंदी भाषा और साहित्य का इतिहास

[क] पाठ्यक्रम के उद्देश्य

इस पाठ्यक्रम का लक्ष्य छात्रों को हिंदी भाषा और उसके साहित्य के इतिहास के विकास से परिचित करवाना है।

[ख] पाठ्यक्रम के पठन-पाठन के परिणाम

इस पाठ्यक्रम की मदद से छात्रों को हिंदी साहित्य के इतिहास के विभिन्न कालों की प्रमुख प्रवृत्तियों की आलोचनात्मक समझ विकसित होगी जिससे वह साहित्य का बेहतर ढ़ंग से अध्ययन एवं विश्लेषण कर पाएँगे।

हिंदी कथा साहित्य

[क] पाठ्यक्रम के उद्देश्य

इस कोर्स का लक्ष्य छात्रों को कथा साहित्य के उद्भव और विकास से परिचित कराना है। छात्रों को यह भी समझने में मदद मिलेगी की एक गद्य विधा के रूप में कथा साहित्य की स्थिति कैसी है।

[ख] पाठ्यक्रम के पठन-पाठन के परिणाम

इस कोर्स के माध्यम से छात्रों को कथा साहित्य के विकास को समझने में मदद मिलेगी।। प्रमुख कथा साहित्यकारों के जीवन और रचनाओं के माध्यम से कहानी और

उपन्यास की उपयोगिता को जानने का अवसर प्राप्त होगा। इसके अलावा छात्रों को कथा लेखन के रचनात्मक पक्ष को जानने का भी अवसर प्राप्त होगा।

हिंदी भाषा का व्यावहारिक व्याकरण

[क] पाठ्यक्रम के उद्देश्य

किसी भी भाषा के ज्ञान के लिए उस भाषा के व्याकरण का ज्ञान विशेष महत्त्व रखता है। ध्वनि, शब्द, पद, वाक्यांश का न केवल ज्ञान होना चाहिए वरन किसी भी भाषा को एकरूप बनाने में व्याकरण की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। वर्तमान समय में हिंदी भाषा के वैश्वीकृत होते रूप को सुदृढ़ करने हेतु व्याकरण को व्यावहारिक बनाना भी अनिवार्य हो गया है। इस पाठ्यक्रम का लक्ष्य छात्रों को इन्हीं बिन्दुओं से परिचित कराना है।

[ख] पाठ्यक्रम के पठन-पाठन के परिणाम

इस पाठ्यक्रम छात्रों का भाषा के व्याकरणिक नियमों से परिचित करवाएगा और व्याकरण के आधारभूत नियमों की जानकारी देगा। भाषा की व्याकरण के द्वारा ही किसी भाषा को मानक रूप की प्राप्ति होती है ऐसे में यह पाठ्यक्रम छात्रों को भाषा के मानक रूप प्राप्त करने की प्रक्रिया से परिचित करवाएगा। इससे छात्रों को भाषा की विविध ध्वनियों के उच्चारण के नियमों का समुचित ज्ञान प्राप्त होगा।

SEC हिंदी रचनात्मक लेखन

[क] पाठ्यक्रम के उद्देश्य

इस पाठ्यक्रम का लक्ष्य छात्रों में रचनात्मक कौशल का विकास करना है जिससे कि वह हिंदी व्यावहारिक पक्षों की समझ विकसित कर पाएँ।

[ख] पाठ्यक्रम के पठन-पाठन के परिणाम

इस पाठ्यक्रम में छात्रों को रचनात्मक लेखन की अवधारणा एवं सैद्धांतिक पक्षों की जानकारी प्रदान की जाएगी। साहित्य के इतर मीडिया, विज्ञापन और पत्रकारिता आदि क्षेत्रों में किए जाने वाले लेखन के कौशल को छात्रों को सिखाया जाएगा। भाषा का बेहतर ढ़ंग से प्रयोग करने के कौशल को विकसित करने का यत्न भी किया जाएगा।

बी. कॉम.

HN-A हिंदी गद्य उद्भव और विकास 'क'

[क] पाठ्यक्रम के उद्देश्य

इस पाठ्यक्रम का लक्ष्य छात्रों को हिंदी गद्य के उद्भव और विकास से परिचित कराना है ताकि वह गद्य की सभी विधाओं के विकास को बेहतर ढ़ंग से समझ पाए।

[ख] पाठ्यक्रम के पठन-पाठन के परिणाम

इस पाठ्यक्रम के माध्यम से छात्रों को हिंदी गद्य के उद्भव की आवश्यकता को समझने का अवसर प्राप्त होगा और साथ ही यह जाने में मदद मिलेगी की गद्य की विधा का विकास किन परिस्थितियों में हुआ। हिंदी गद्य के विकास को बेहतर ढ़ंग से समझने के लिए कुछ पाठों को पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया गया है ताकि छात्र गद्य की विधाओं का भी परिचय प्राप्त कर पाएँ।

HN-C हिंदी गद्य उद्भव और विकास 'ग'

[क] पाठ्यक्रम के उद्देश्य

इस पाठ्यक्रम का लक्ष्य छात्रों को हिंदी गद्य के उद्भव और विकास से परिचित कराना है ताकि वह गद्य की सभी विधाओं के विकास को बेहतर ढ़ंग से समझ पाए।

[ख] पाठ्यक्रम के पठन-पाठन के परिणाम

इस पाठ्यक्रम के माध्यम से छात्रों को हिंदी गद्य के उद्भव की आवश्यकता को समझने का अवसर प्राप्त होगा और साथ ही यह जाने में मदद मिलेगी की गद्य की विधा का विकास किन परिस्थितियों में हुआ। हिंदी गद्य के विकास को बेहतर ढ़ंग से समझने के लिए कुछ पाठों को पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया गया है ताकि छात्र गद्य की विधाओं का भी परिचय प्राप्त कर पाएँ।

CTH वार्तालाप तथा देवनागरी लिपि

[क] पाठ्यक्रम के उद्देश्य

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को वार्तालाप के प्राम्भिक रूपों से अवगत कराना है। साथ ही हिंदी भाषा की लिपि के विकास से अवगत करवाना है।

[ख] पाठ्यक्रम के पठन-पाठन के परिणाम

इस पाठ्यक्रम के माध्यम से छात्र वार्तालाप के विभिन्न स्तरों की समझ विकसित कर पाएँगे। हिंदी भाषा के ज्ञान में देवनागरी लिपि का ज्ञान अत्यंत महत्वपूर्ण है। लिपि किसी भी भाषा की संरचना और विकास का आधार है। यह पाठ्यक्रम के माध्यम से छात्रों को हिंदी भाषा के स्वरुप को समझने का अवसर प्राप्त होगा।

जनवरी-मई 2020

हिंदी साहित्य का इतिहास (आदिकाल और मध्यकाल)

[क] पाठ्यक्रम के उद्देश्य

प्रस्तुत पाठ्यक्रम का लक्ष्य छात्रों को हिंदी साहित्य के इतिहास से परिचित करवाना है ताकि उनमें हिंदी साहित्य की बेहतर समझ विकसित हो। इस कोर्स में विशेषरूप से हिंदी साहित्य के आरंभिक कालों जैसे आदिकाल और मध्यकाल को अध्ययन का आधार बनाया गया है।

[ख] पाठ्यक्रम के पठन-पाठन के परिणाम

यह पाठ्यक्रम छात्रों की हिंदी साहित्य के इतिहास के पठन-पाठन की समझ को विकसित करेगा। छात्र विभिन्न इतिहासकारों के द्वारा लिखित हिंदी साहित्य के इतिहास को विश्लेषणपरक ढ़ंग से समझने में मदद मिलेगी। छात्रों को इतिहास के लेखन और निर्माण के विभिन्न पक्षों से भी परिचित करवाया जाएगा।

हिंदी कविता (रीतिकालीन काव्य)

[क] पाठ्यक्रम के उद्देश्य

इस कोर्स के माध्यम से रीतिकालीन कविता एवं कवियों का परिचय प्राप्त होगा। विधार्थियों को रीतिकालीन कवियों की रचनाओं पाठ करने का अवसर प्राप्त होगा।

[ख] पाठ्यक्रम के पठन-पाठन के परिणाम

इस कोर्स के माध्यम से छात्रों को भक्तिकाल के बाद सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनैतिक परिस्थितियों में हो रहे बदलावों के कारण कविता में आ रहे बदलावों को जानने समझने में मदद मिलेगी। संस्कृति लक्षण ग्रंथों की परिपाटी पर रचे जा रहे रीतिकालीन लक्षण ग्रंथों को समझने का बेहतर अवसर प्राप्त होगा। छात्रों को ब्रजभाषा काव्य की समृद्ध परम्परा को जानने और समझने का भी अवसर प्राप्त होगा।

भारतीय काव्यशास्त्र

[क] पाठ्यक्रम के उद्देश्य

इस कोर्स के माध्यम से छात्रों को भारतीय काव्यशास्त्र की समृद्ध परंपरा का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे और साथ ही संस्कृत काव्यशास्त्र के भारतीय काव्यशास्त्र पर प्रभाव की विवेचना भी कर पाएंगे। यह कोर्स छात्रों को भारतीय साहित्य की प्राचीन परंपरा से जोड़ेगा।

[ख] पाठ्यक्रम के पठन-पाठन के परिणाम

इस कोर्स के द्वारा छात्रों को संस्कृत काव्यशास्त्र की परम्परा पर आधारित भारतीय काव्यशास्त्र का ज्ञान प्राप्त हुआ, जिसके अंतर्गत काव्य के विभिन्न लक्षणों जैसे रस, छन्द, वक्रोक्ति एव अलंकार आदि का ज्ञान प्राप्त हुआ। छात्रों को हिंदी आलोचना की परम्परा की पूर्वपीठिका के सन्दर्भ में रखकर भारतीय काव्यशास्त्र को पढाया गया है।

हिंदी कविता (छायावाद के बाद)

[क] पाठ्यक्रम के उद्देश्य

इस कोर्स के द्वारा छात्र छायावादयुगीन कविता के बाद के हिंदी साहित्य के स्वरूप को जान सकेंगे। इसका उद्देश्य विशेषरूप से छायावाद के बाद की कविता के भाव और शिल्प का अध्ययन करना रहेगा।

[ख] पाठ्यक्रम के पठन-पाठन के परिणाम

इस पाठ्यक्रम के पठन पाठन से छात्रों को कविता को एक कालविशेष के सन्दर्भ में जानने एवं समझने में मदद मिलेंगी। इसके अतिरिक्त यह भी जानने में मदद मिलेगी कि उच्च शैक्षिक स्तर पर हिंदी कविता किस प्रकार महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

विद्यार्थियों में काव्य सौन्दर्य, काव्यानुभूति को समझने एवं परखने का ज्ञान विकसित होगा। साथ ही कविता के पठन पाठन से छात्रों में उद्दात भाव का संचरण होने में मदद मिलेगी।

हिंदी उपन्यास

[क] पाठ्यक्रम के उद्देश्य

इस कोर्स का उद्देश्य छात्रों को गद्य की विधा उपन्यास के उद्भव और विकास से परिचित कराना है।

[ख] पाठ्यक्रम के पठन-पाठन के परिणाम

इस कोर्स के द्वारा छात्रों ने उपन्यास के जन्म एवं आवश्यकता को समझा साथ ही उपन्यास के उद्भव के कारणों को भी जाना। आधुनिक काल से लेकर समकालीन प्रतिनिधि उपन्यासकारों जैसे श्रीनिवासदास, प्रेमचंद, यशपाल और मन्नू भंडारी आदि के बारे में पढ़ा और उपन्यास की विधा के प्रति एक बेहतर समझ को विकसित करने का प्रयास किया।

हिंदी आलोचना

[क] पाठ्यक्रम के उद्देश्य

इस कोर्स का लक्ष्य छात्रों में आलोचना की सैद्धांतिकी और उसके प्रति एक व्यावहारिक समझ को पैदा करना है। जिससे की किसी भी रचना का तार्किक दृष्टि अध्ययन मनन किया जा सके।

[ख] पाठ्यक्रम के पठन-पाठन के परिणाम

इस कोर्स के माध्यम से छात्रों ने हिंदी आलोचना के उद्भव और विकास को बेहतर ढ़ंग से समझा। भिन्न आलोचकों के आलोचनात्मक कार्यों के द्वारा छात्रों में किसी भी रचना को विश्लेषित करने की समझ का विकास किया गया जिससे की वह रचना के गुण और दोष को तार्किक ढ़ंग से देख सके। छात्रों को आलोचना के पाठों के साथ-साथ उनके व्यक्तित्व और विचारधाराओं को समझने की आवश्यकताओं को समझने पर भी बल दिया गया। जिससे की छात्रों की आलोचना कर्म के प्रति रूचि जागृत हो सके।

हिंदी निबंध और अन्य गद्य विधाएं

[क] पाठ्यक्रम के उद्देश्य

इस पाठ्यक्रम का लक्ष्य छात्रों को कहानी और उपन्यास आदि के इतर निबंध और अन्य गद्य विधाओं से परिचित कराना है।

[ख] पाठ्यक्रम के पठन-पाठन के परिणाम

इस पाठ्यक्रम में अन्य गद्य विधाओं की कुछ चुनी हुई महत्वपूर्ण रचनाओं के पठन-पठन के माध्यम से इन रचनाओं का विश्लेषण किया जाएगा। यह भी जानने में मदद मिलेगी कि किस प्रकार यह विधाएँ कथेतर साहित्य से अलग है। छात्रों को इन विधाओं के प्रसिद्ध लेखकों एवं उनकी रचनाओं का परिचय भी दिया जाएगा।

DSE-I हिंदी की भाषिक विविधताएँ

[क] पाठ्यक्रम के उद्देश्य

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को विभिन्न भाषाई रूपों में साहित्य की समझ को विकसित करना है।

[ख] पाठ्यक्रम के पठन-पाठन के परिणाम

यह विषय छात्रों को साहित्य और भाषाई संस्कृति के संबंध को समझने में मदद करेगा। छात्रों को विभिन्न भाषा एवं बोलियों के रचनाकारों की रचनाओं की प्रस्तुति के पठन पाठन का अवसर प्राप्त होगा। इनके अध्ययन के अतिरिक्त छात्रों को पर्यटन, नृत्य-संगीत आदि में रूचि का अवसर भी प्राप्त होगा।

DSE-II हिंदी रंगमंच

[क] पाठ्यक्रम के उद्देश्य

इस पाठ्यक्रम का लक्ष्य छात्रों को रंगमंच के सिद्धांतों से परिचित करवाने के साथ-साथ रंगमंच का व्यावहारिक ज्ञान देना है। इनकों समझने का आधार प्रसिद्ध नाटककारों की रचनाओं को बनाया गया है।

[ख] पाठ्यक्रम के पठन-पाठन के परिणाम

यह पाठ्यक्रम छात्रों की रंगमंच के विकास और विभिन्न शैलियों को समझने में मदद करेगा। विभिन्न नाटकों के अध्ययन के माध्यम से प्रसिद्ध रचनाकारों की रंगदृष्टियों से छात्रों को अवगत कराया जाएगा। इसके साथ ही छात्र पारंपरिक और आधुनिक रंगमंच के अंतर को समझ पाएँगे। रंगमच के गहन अध्ययन से छात्रों में भारतबोध विकसित होगा।

जी.ई. (पटकथा और संवाद लेखन)

[क] पाठ्यक्रम के उद्देश्य

इस पाठ्यक्रम का लक्ष्य सिनेमा और लेखन में रूचि रखने वाले विद्यार्थियों को इस विषय पर बेहतर समझ बनाने का अवसर प्रदान करना है।

[ख] पाठ्यक्रम के पठन-पाठन के परिणाम

इस पाठ्यक्रम के माध्यम से छात्र साहित्यिक कृतियों को पटकथा में रूपांतरित करने के लेखकीय कौशल को सीख पाएँगे और साथ ही संवाद लेखन के तरीकों की समझ भी विकसित करने में सक्षम होंगे। यह विषय विद्यार्थियों को भविष्य में रोजगार के अवसर भी मुहैया करवाने में मददगार साबित होगा।

जी.ई. (भाषा शिक्षण)

[क] पाठ्यक्रम के उद्देश्य

इस पाठ्यक्रम का लक्ष्य छात्रों को भाषा शिक्षण की अवधारणात्मक स्थिति और महत्व के साथ-साथ राष्ट्रीय, सामाजिक और शैक्षिक सन्दर्भों से परिचित करवाना है।

[ख] पाठ्यक्रम के पठन-पाठन के परिणाम

इस पाठ्यक्रम की मदद से छात्र भाषा शिक्षण की संकल्पनाओं और सिद्धांतों से परिचित होंगे। भाषा शिक्षण की ऐसी समझ विकसित करने के पश्चात् विभिन्न भाषाई कौशलों के ज्ञानार्जन के उपरांत विद्यार्थी शिक्षण, मीडिया, अभिनय आदि क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा का विकास कर सकेंगे। वे शिक्षण और प्रशिक्षण के क्षेत्र में नई पद्धतियों का अनुसंधान करने की दिशा में आगे बढ़ पाएँगे।

SEC भाषा और समाज

[क] पाठ्यक्रम के उद्देश्य

इस पाठ्यक्रम का लक्ष्य भाषा और समाज के अन्त: संबंध स्पष्ट करते हुए भाषा और समाज के विविध पहलूओं को जानने में छात्रों की मदद करना है। भाषा व्यवस्था एवं उसके विविध रूपों से अवगत होना था भाषा के समाजशास्त्र के विविध रूपों का अध्ययन करना है ताकि समाज में निरंतर हो रहे बदलावों को बेहतर ढ़ंग से समझा जा सके।

[ख] पाठ्यक्रम के पठन-पाठन के परिणाम

इस पाठ्यक्रम के द्वारा छात्रों में भाषा और समाज के परस्पर संबंध को लेकर नए विचारों का विकास होगा जिससे वे भाषा की संरचना और भाषा व्यवहार को बेहतर ढ़ंग से समझ पाएँगे। पाठ्यक्रम के माध्यम से वह भाषा को प्रभावित करने वाले विभिन्न सामाजिक कारकों जैसे जाति, धर्म, आयु और लिंग आदि से भी परिचित हो पाएँगे।

बी.ए.(प्रोग्राम)

HN A हिंदी भाषा और साहित्य 'क'

[क] पाठ्यक्रम के उद्देश्य

इस पाठ्यक्रम का लक्ष्य छात्रों को हिंदी भाषा और साहित्य की सामान्य जानकारी प्रदान करना है। इसके अलावा हिंदी की राजभाषा, राष्ट्रभाषा और संपर्कभाषा के रूप में स्थिति का परिचय करना है।

[ख] पाठ्यक्रम के पठन-पाठन के परिणाम

इस पाठ्यक्रम की मदद से छात्रों को हिंदी की संवैधानिक स्थिति को जानने और समझने में मदद मिलेगी। इसके अतिरिक्त विशिष्ट कविताओं के अध्ययन-विश्लेषण के माध्यम से कविता संबंधी समझ को विकसित करने में भी मदद मिलेंगी।

HN B हिंदी भाषा और साहित्य 'ख'

[क] पाठ्यक्रम के उद्देश्य

इस पाठ्यक्रम का लक्ष्य हिंदी भाषा और उसके साहित्य के विकास से छात्रों को परिचित कराना है। छात्रों को कविता के अध्यन विश्लेषण के माध्यम से साहित्य के विभिन्न पक्षों से परिचित कराना है।

[ख] पाठ्यक्रम के पठन-पाठन के परिणाम

इस पाठ्यक्रम से छात्रों को हिंदी साहित्य के विभिन्न कालों के प्रमुख कवियों जैसे भक्तिकाल से कबीर, रीतिकाल से बिहारी और आधुनिक काल से निराला आदि की रचनाओं के माध्यम से साहित्य को जानने समझने का अवसर प्राप्त होगा। साथ ही छात्रों में काव्य की आलोचनात्मक दृष्टि का भी विकास होगा।

HN C हिंदी भाषा और साहित्य 'ग'

[क] पाठ्यक्रम के उद्देश्य

प्रस्तुत पाठ्यक्रम का लक्ष्य छात्रों को हिंदी भाषा का सामान्य परिचय देना एवं हिंदी के भौगौलिक विस्तार से परिचित कराना रहेगा। साथ ही विभिन्न कालों में काव्य के विकास को जानने समझने का अवसर भी प्राप्त होगा।

[ख] पाठ्यक्रम के पठन-पाठन के परिणाम

इस पाठ्यक्रम के माध्यम से छात्रों को आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक के काव्य की सामान्य विशेषताओं के विषय में जाने का अवसर प्राप्त होगा। कबीर, सूरदास, घनानंद से लेकर आधुनिक काल के प्रमुख कवियों जैसे सुभद्राकुमारी चौहान और मैथिलीशरण गुप्त आदि की रचनाओं के अध्ययन मनन के द्वारा तत्कालीन समाज की परिस्थितियों को समझने में मदद मिलेगी।

हिंदी अनुशासन

हिंदी कविता मध्यकाल और आधुनिककाल

[क] पाठ्यक्रम के उद्देश्य

इस पाठ्यक्रम का लक्ष्य छात्रों को मध्यकाल और आधुनिक काल में हो रहे कविता के विकास से परिचित करवाना है। साथ ही छात्रों को मध्यकाल और आधुनिक काल के प्रमुख कवियों से का परिचय देना है।

[ख] पाठ्यक्रम के पठन-पाठन के परिणाम

इस पाठ्यक्रम के द्वारा छात्र कविताओं के अध्ययन-विश्लेषण की पद्धति को सीख और समझ पाएंगे। तत्कालीन परिस्थितियों को काव्य के माध्यम से समझने के कारण छात्रों को साहित्य के सामाजिक-राजनितिक-सांस्कृतिक पहलूओं को जाने में भी मदद मिलेगी।

अन्य गद्य विधाएँ

[क] पाठ्यक्रम के उद्देश्य

इस पाठ्यक्रम का लक्ष्य छात्रों को कहानी और उपन्यास आदि के इतर गद्य की प्रचलित अन्य गद्य विधाओं से परिचित कराना है।

[ख] पाठ्यक्रम के पठन-पाठन के परिणाम

इस पाठ्यक्रम में अन्य गद्य विधाओं की कुछ चुनी हुई महत्वपूर्ण रचनाओं के पठन-पठन के माध्यम से इन रचनाओं का विश्लेषण किया जाएगा। यह भी जानने में मदद मिलेगी की किस प्रकार यह विधाएँ कथेतर साहित्य से अलग है। छात्रों को इस विधाओं के प्रसिद्ध लेखक एवं उनकी रचनाओं का परिचय भी दिया जाएगा

विशेष अध्ययन: एक प्रमुख साहित्यकार (कबीर)

[क] पाठ्यक्रम के उद्देश्य

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को हिंदी साहित्य के भक्तिकाल, निर्गुण काव्यधारा और संत काव्यधारा से अवगत कराना है। साथ ही कबीर-काव्य की प्रकृति और संरचना की समझ विकसित करना है।

[ख] पाठ्यक्रम के पठन-पाठन के परिणाम

इस पाठ्यक्रम के माध्यम से छात्रों को भक्तिकाल की राजनीतिक-सामाजिक-सांस्कृतिक-धार्मिक स्थितियों को समझने में मदद मिलेंगी। यहाँ भक्तिकाल के प्रमुख हस्ताक्षरों में से प्रमुख माने जाने वाले कवीरदास की रचनाओं के अध्ययन विश्लेषण के माध्यम से तत्कालीन समाज की परिस्थितियों को समझने में मदद मिलेगी। कबीरदास के काव्य में दिखाई पड़ने वाली सामाजिक जीवन की विवेचना करने का अवसर भी प्राप्त होगा।

AECC हिंदी भाषा और संप्रेषण

[क] पाठ्यक्रम के उद्देश्य

इस पाठ्यक्रम का लक्ष्य भाषिक संप्रेषण के स्वरुप और सिद्धांतों से छात्रों का परिचय करवाना है। छात्रों को संप्रेषण के सभी माध्यमों का ज्ञान प्रदान करवाया जाना भी इसका लक्ष्य है ताकि भाषा और संप्रेषण को पूर्ण रूप से समझा जा सके।

[ख] पाठ्यक्रम के पठन-पाठन के परिणाम

इस पाठ्यक्रम की मदद से छात्र संप्रेषण की प्रक्रिया और मॉडलों के अलावा अभाषिक संप्रेषण की आवश्यकता एवं इसके प्रयोगों के बारे में एक बेहतर समझ विकसित कर पाएंगे। रोजगार की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए व्यावसायिक सम्प्रेषण का ज्ञान भी छात्रों को प्रदान किया जाएगा।

B.Com HN B हिंदी गद्य उद्भव और विकास

[क] पाठ्यक्रम के उद्देश्य

इस पाठ्यक्रम का लक्ष्य छात्रों को हिंदी गद्य के उद्भव और विकास से परिचित कराना है ताकि वह गद्य की सभी विधाओं के विकास को बेहतर ढ़ंग से समझ पाए।

[ख] पाठ्यक्रम के पठन-पाठन के परिणाम

इस पाठ्यक्रम के माध्यम से छात्रों को हिंदी गद्य के उद्भव की आवश्यकता को समझने का अवसर प्राप्त होगा और साथ ही यह जाने में मदद मिलेगी की गद्य की विधा का विकास किन परिस्थितियों में हुआ। आधुकनिक गद्य का जनक माने जाने वाले भारतेन्दु के सम्पूर्ण काल की जानकारी भी छात्रों को प्राप्त होगी। हिंदी गद्य के विकास को बेहतर ढ़ंग से समझने के लिए कुछ पाठों को पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया गया है ताकि छात्र गद्य की विधाओं का भी परिचय प्राप्त कर पाएँ।

CTH व्यावहारिक व्याकरण तथा रचना

[क] पाठ्यक्रम के उद्देश्य

किसी भी भाषा के ज्ञान के लिए उस भाषा के व्याकरण का ज्ञान विशेष महत्त्व रखता है। ध्वनि, शब्द, पद, वाक्यांश का न केवल ज्ञान होना चाहिए वरन किसी भी भाषा को एकरूप बनाने में व्याकरण की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। वर्तमान समय में हिंदी भाषा के वैश्वीकृत होते रूप को सुदृढ़ करने हेतु व्याकरण को व्यावहारिक बनाना भी अनिवार्य हो गया है। इस पाठ्यक्रम का लक्ष्य छात्रों को इन्हीं बिन्दुओं से परिचित कराना है।

[ख] पाठ्यक्रम के पठन-पाठन के परिणाम

इस पाठ्यक्रम छात्रों का भाषा के व्याकरणिक नियमों से परिचित करवाएगा और व्याकरण के आधारभूत नियमों की जानकारी देगा। भाषा की व्याकरण के द्वारा ही किसी भाषा को मानक रूप की प्राप्ति होती है, ऐसे में यह पाठ्यक्रम छात्रों को भाषा के मानक रूप प्राप्त करने की प्रक्रिया से परिचित करवाएगा। इससे छात्रों को भाषा की विविध ध्वनियों के उच्चारण के नियमों का समुचित ज्ञान प्राप्त होगा।

Received from TIC - Hindi through email.

M. Sailaja

Ms. Sailaja Modem
Coordinator – IQAC
Gargi College
(University of Delhi)

Prof. Promila Kumar
Principal (Offg.)
Gargi College
(University Of Delhi)